बढ़ते कदम...

कविताओं, नज़्मों, गीतों
और फिल्मी गानों का संग्रह

इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी

पुस्तिक सीरीज़–100

प्रकाशक
इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी
फ्लैट नंबर-110, नम्बरदार हाउस,
62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका, नई दिल्ली-110067
टेलीफोन - 011-26177904 टेलीफैक्स - 011-26177904
ईमेल - prakashan.isd@gmail.com
वेबसाइट - isd.net.in

प्रकाशन वर्ष - 2023

केवल सीमित वितरण के लिए

बढ़ते कदम

[कविताओं, नज़्मों, गीतों और फिल्मी गानों का संग्रह]

इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी

दो शब्द

आईएसडी की पुस्तिका सीरीज़ की इस कड़ी में हमने ऐसी कविताओं, नज़्मों, गीतों और फिल्मी गानों का चयन किया है जिनमें देश की आज़ादी की तड़प है, धरती को स्वर्ग बनाने का सपना है, सांप्रदायिक सौहार्द, भाईचारा, लैंगिक समानता और नारी स्वतंत्रता के लिए काम करने पर ज़ोर है और मिल-जुलकर हर ज़ुल्म, जब्र, अन्याय, भूख और शोषण के ख़िलाफ़ संघर्ष करने का जज़्बा है। इन कविताओं और गीतों में अधिकांश ऐसे हैं जिनसे पाठक पहले ही से भलीभांति परिचित हैं क्योंकि इन्हें विभिन्न अवसरों पर कोरस की शक्ल में गाया भी जाता रहा है और निस्संदेह इनसे हमें अपने उद्देश्य के लिए संघर्ष करने का हौसला और शक्ति मिलती है। आशा है कि इस दृष्टि से यह संग्रह उपयोगी सिद्ध होगा।

[अनुक्रम]

क्र.सं.		पेज सं.
1.	इतनी शक्ति हमें देना दाता	5
2.	ऐ मालिक तेरे बन्दे हम	6
3.	हम को मन की शक्ति देना	7
4.	लब पे आती है दुआ	8
5.	अल्ला हू	9
6.	तू ही राम है तू ही रहीम	10
7.	मेरा रंग दे बसंती चोला	11
8.	ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम	12
9.	सरफ़रोशी की तमन्ना	14
10.	तू ज़िन्दा है	15
11.	हम होंगे कामयाब	16
12.	मिल के चलो	17
13.	ये जंग है जंग-ए-आज़ादी	18
14.	बोल अरी ओ धरती बोल	20
15.	बुनियाद हिलनी चाहिए	21
16.	इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें	22
17.	मशाले लेकर चलना, जब तक रात बाकी है	23
18.	ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के	24
19.	सारी दुनिया मांगेंगे	25
20.	पढना-लिखना सीखो	26
21.	दरबार-ए-वतन	27
22.	अब कोई शम्मा जलाइए	28
23.	मुल्क में हैं आवाजें दो	29
24.	मैंने ही सजाया है	30
25.	तू हिंदू बनेगा ना मुसलमान बनेगा	32
26.	मत बाँटो इंसान को	34
27.	ज़रा सबसे ये कह दो	35
28.	पर लगा लिए हैं हमने	36
29.	इरादे कर बुलंद	37
30.	मेरे सपनों को जानने का हक़ रे	38
31.	वो सुब्ह कभी तो आएगी	40
32.	वो सुब्ह हमीं से आएगी	41
33.	ये किसका लहू है कौन मरा	42
34.	अपने लिये जिये तो क्या जिये	44
35.	हम चले	46
36.	दिलो में घाव ले के भी चल चलो	47
37.	धरती कहे पुकार के	48
38.	चीन-ओ-अरब हमारा, हिन्दोस्ताँ हमारा	49
39.	कहब तो लग जाई धक् से	50
40.	अजदिया हमरा के भावेले	51
41.	बडी-बडी कोठिया सजाये पूंजीपतिया	52
42.	गाँव-गाँव से उठो	54
43.	डोला हो डोला	55
44.	जैतां एक दिन तो आलो	58

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।

दूर अज्ञान के हो अँधेरे,
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम,
जितनी भी दे भली ज़िन्दगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना।

हम न सोचें हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बांटें सभी को,
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन।
अपनी करुणा का जल तू बहा के,
कर दे पावन हर एक मन का कोना।
हम चलें नेक रस्ते पे,
हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना

● अभिलाष

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे करम,
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हंसते हुए निकले दम।
ऐ मालिक...

बड़ा कमज़ोर है आदमी, अभी लाखों हैं इसमें कमी,
पर तू जो खड़ा, है दयालू बड़ा, तेरी किरपा से धरती थमी,
दिया तूने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सबके ग़म,
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हंसते हुए निकले दम,
ऐ मालिक...

ये अँधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा,
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नज़र, सुख का सूरज छुपा जा रहा।
है तेरी रोशनी में जो दम, तू अमावास को कर दे पूनम।
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हंसते हुए निकले दम।
ऐ मालिक...

जब ज़ुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना,
वो बुराई करे, हम भलाई भरें, नहीं बदले की हो भावना,
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम,
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हंसते हुए निकले दम।
ऐ मालिक...

● भरत व्यास

हम को मन की शक्ति देना

हम को मन की शक्ति देना, मन विजय करें,
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।
हम को मन की शक्ति देना...

भेदभाव अपने मन से साफ़ कर सकें,
दूसरों से भूल हो तो माफ़ कर सकें
झूठ से बचे रहें सच का दम भरें,
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।
हम को मन की शक्ति देना...

मुश्किलें पड़े तो हम पे, इतना करम कर,
साथ दें तो धरम का, चलें तो धरम पर।
खुद का हौसला रहे, बदी से ना डरें,
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।
हम को मन की शक्ति देना...

● गुलज़ार

लब पे आती है दुआ

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी,
ज़िंदगी शमा की सूरत हो ख़ुदाया मेरी।

दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए,
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की ज़ीनत,
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत।

ज़िंदगी हो मेरे परवाने की सूरत या-रब,
इल्म की शमा से हो मुझ को मोहब्बत या-रब।

हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना,
दर्द-मंदों से ज़ईफ़ों से मोहब्बत करना।

मेरे अल्लाह! बुराई से बचाना मुझको,
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको।

● अल्लामा इक़बाल

अल्ला हू...

अल्ला हू, अल्ला हू, अल्ला हू, अल्ला हू...

ये जमीं जब न थी ये जहां जब न था,
चाँद तारे न थे, आसमां भी न था।
जन्म और मृत्यु का सिलसिला जब न था,
था न तब कुछ यहाँ, था मगर तू ही तू
अल्ला हू...

आँख की आँख तू, साँस की साँस तू,
ख़ून का रंग तू, दिल की धड़कन भी तू।
तू ही दरिया, तू ही नाव, साहिल भी तू,
बीच मझधार तू, और खिवैया भई तू।
अल्ला हू...

बूंद तू, लहर तू और सागर भी तू,
जन्म तू, मृत्यु तू और जीवन भी तू।
दृश्य तू, आँख तू और दृष्टा भी तू,
शब्द तू, कान तू, सुनने वाला भी तू।
अल्ला हू...

रंग तू, चित्र तू, और चितेरा भी तू,
साज़ तू, गीत तू, गाने वाला भी तू।
तू डगर, तू ही मंजिल और मुसाफिर भी तू,
भक्त तू, ध्यान तू, और भगवान तू।
अल्ला हू...

गीत मेरे, ख़ुदा तू मेरा नाम है,
मैं हूँ मीरा तेरी, तू मेरा श्याम है।
मैं हूँ काया तेरी, तू मेरा प्राण है,
तेरा साज हूँ मैं, मेरा संगीत तू।
अल्ला हू...

तू ही राम है तू ही रहीम

तू ही राम है तू ही रहीम है, तू करीम कृष्ण ख़ुदा हुआ।
तू ही वाहे गुरू तू ईसा मसीह, हर नाम में तू रमा हुआ।

अरदास है कहीं कीर्तन, कहीं राम धुन कहीं आवहन।
विधि वेद का है ये सब रचन, तू प्रकाश अपना दिखा रहा।

तेरा भेद पाक कुरान में, तेरा दरस वेद पुरान में।
गुरू ग्रंथ जी के बखान में, तू प्रकाश अपना दिखा रहा।

विधि देश जाति के भेद से, हमें मुक्त कर हे परमपिता।
तुझे देख पायें सभी में हम, तुझे देख पायें सभी जगह।

तू ही ध्यान में तू ही ज्ञान में, तू ही प्राणियों के प्राण में।
कहीं आँसुओं में बहा तू ही, कहीं फूल बनके खिला हुआ।

तेरे गुण नहीं हम गा सके, तुझे मन में अपने न ला सके।
कर कृपा यही तुझे पा सकें, तेरे दर पे सर ये झुका हुआ।

मेरा रंग दे बसंती चोला

मेरा रंग दे बसंती चोला
ओ मेरा रंग दे बसंती चोला माए
रंग दे बसंती चोला

दम निकले इस देश की खातिर बस इतना अरमान है
एक बार इस राह पे मरना सौ जन्मों के समान है

देख के वीरों की कुर्बानी
अपना दिल भी बोला
मेरा रंग दे बसंती चोला...

जिस चोले को पहन शिवाजी खेले अपनी जान पे
जिसे पहन झांसी की रानी मिट गई अपनी आन पे

आज उसी को पहन के निकला
हम मस्तों का टोला
मेरा रंग दे बसंती चोला...

बड़ा ही गहरा दाग है यारों जिसका गुलामी नाम है
उसका जीना भी क्या जीना जिसका देश गुलाम है

सीने में जो दिल था यारों
आज बना वो शोला
मेरा रंग दे बसंती चोला माए
रंग दे बसंती चोला...

ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम

जलते भी गए, कहते भी गए, आज़ादी के परवाने
जीना तो उसी का जीना है, जो मरना वतन पे जाने

ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे
फूल क्या चीज़ है तेरे कदमों पे हम
भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन...

कोई पंजाब से, कोई महाराष्ट्र से
कोई यूपी से है, कोई बंगाल से
तेरी पूजा की थाली में लायें हैं हम
फूल हर रंग के, आज हर डाल से

नाम कुछ भी सही, पर लगन एक है
जोत से जोत दिल की जला जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे,
ऐ वतन, ऐ वतन.....

तेरी जानिब उठी जो कहर की नज़र
उस नज़र को झुका के ही दम लेंगे हम
तेरी धरती पे है जो, कदम गैर का
उस कदम का निशां तक मिटा देंगे हम

जो भी दीवार आएगी अब सामने
ठोकरों से उसे हम गिरा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन...

सह चुके हैं सितम हम बहुत गैर के
अब करेंगे हर एक वार का सामना
झुक सकेगा ना अब सरफरोशों का सर
चाहे हो खूनी तलवार का सामना

सर पे बांधे कफ़न, हम तो हँसते हुए
मौत को भी गले से लगा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन

जब शहीदों की अर्थी उठे धूम से
देश वालों तुम आंसू बहाना नहीं
पर मनाओ जब आज़ाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं

लौट कर आ सकें ना जहाँ में तो क्या
याद बनके दिलों में तो आ जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन...

ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम,
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे,
फूल क्या चीज़ है तेरे क़दमों पे हम,
भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे.
ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम,
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जायेंगे,

इन्कलाब जिंदाबाद...
इन्कलाब जिंदाबाद...
इन्कलाब जिंदाबाद...

सरफ़रोशी की तमन्ना

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ु-ए-क़ातिल में है।

ऐ शहीद-ए-मुल्क-ओ-मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत का चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है।

वाए क़िस्मत पाँव की ऐ ज़ोफ़ कुछ चलती नहीं
कारवाँ अपना अभी तक पहली ही मंज़िल में है

रहरव-ए-राह-ए-मोहब्बत रह न जाना राह में
लज़्ज़त-ए-सहरा-नवर्दी दूरी-ए-मंज़िल में है

शौक़ से राह-ए-मोहब्बत की मुसीबत झेल ले
इक ख़ुशी का राज़ पिन्हाँ जादा-ए-मंज़िल में है

आज फिर मक़्तल में क़ातिल कह रहा है बार-बार
आएँ वो शौक़-ए-शहादत जिन के जिन के दिल में है।

मरने वालो आओ अब गर्दन कटाओ शौक़ से
ये ग़नीमत वक़्त है ख़ंजर कफ़-ए-क़ातिल में है

माने-ए-इज़हार तुम को है हया, हम को अदब
कुछ तुम्हारे दिल के अंदर कुछ हमारे दिल में है

मय-कदा सुनसान ख़ुम उल्टे पड़े हैं जाम चूर
सर-निगूँ बैठा है साक़ी जो तिरी महफ़िल में है

वक़्त आने दे दिखा देंगे तुझे ऐ आसमाँ
हम अभी से क्यूँ बताएँ क्या हमारे दिल में है

अब न अगले वलवले हैं और न वो अरमाँ की भीड़
सिर्फ़ मिट जाने की इक हसरत दिल-ए-'बिस्मिल' में है

तू ज़िन्दा है...

तू ज़िन्दा है तो ज़िन्दगी की जीत में यकीन कर,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन,
ये दिन भी जाएंगे गुज़र, गुज़र गए हज़ार दिन।
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नज़र,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।
तू ज़िन्दा है...

सुबह और शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर,
तू सुन ज़मीन गा रही है, कब से झूम-झूमकर।
तू आ मेरा श्रृंगार कर, तू आ मुझे हसीन कर,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।
तू ज़िन्दा है...

हमारे कारवां को मंज़िलों का इन्तज़ार है,
यह आंधियों, ये बिजलियों की पीठ पर सवार हैं।
तू आ कदम मिला के चल, चलेंगे साथ-साथ हम,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।
तू ज़िन्दा है...

बुरी है आग पेट की, बुरे हैं दिल के दाग़ ये,
न दब सके, एक दिन बनेंगे इन्क़लाब ये,
गिरेंगे जुल्म के महल, बनेंगे फिर नवीन घर,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।
तू ज़िन्दा है...

● शंकर शैलेंद्र

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन ।
हो-हो मन मे है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन।

हम चलेंगे साथ-साथ, डाल हाथों में हाथ,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

होगी शांति चारों ओर, होगी शांति चारों ओर,
होगी शांति चारों ओर एक दिन।
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
होगी शांति चारों ओर एक दिन।

होगी जीत सच्चाई की, होगी जीत सच्चाई की,
होगी जीत सच्चाई की एक दिन।
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
होगी जीत सच्चाई की एक दिन।

युग बदलेगा चारों ओर, युग बदलेगा चारों ओर,
युग बदलेगा चारों ओर एक दिन।
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
युग बदलेगा चारों ओर एक दिन।

नहीं डर किसी का आज, नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज एक दिन
हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
नहीं डर किसी का आज एक दिन।

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन ।

● मार्टिन लूथर किंग (अश्वेत नेता)

मिल के चलो

मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो,
चलो भई, मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो।
ये वक्त की आवाज़ है, मिल के चलो,
ये ज़िंदगी का राज़ है, मिल के चलो।
मिल के चलो...

आज दिल की रंजिशें मिटा के आ,
आज भेदभाव सब मिटा के आ,
आज़ादी से है प्यार, जिन्हें देश से है प्रेम,
क़दम से क़दम और दिल से दिल मिला के आ।
मिल के चलो ...

यह भूख क्यों, ये ज़ुल्म का है जोर क्यों?
ज़ोर क्यों, ज़ोर क्यों ?
यह जंग-जंग-जंग का है शोर क्यों?
शोर क्यों, शोर क्यों ?
हर एक नज़र बुझी-बुझी हर एक दिल उदास
बहुत फरेब खाए, अब फरेब और क्यों?
मिल के चलो ...

जैसे सुर से सुर मिले हों राग के,
राग के, राग के
जैसे शोले मिल के बढ़ें आग के,
आग के, आग के
जिस तरह चिराग़ से मिले चिराग,
ऐसे चलो भेद तेरा-मेरा त्याग के,
मिल के चलो ...

● प्रेम धवन

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले ।
हम हिन्द के रहने वालों की,
महकूमों[1] की मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की
दहक़ानों[2] की मज़दूरों की

ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले।
सारा संसार हमारा है,
पूरब पश्चिम उत्तर दक्खिन
हम अफ़रंगी हम अफरीकी
हम चीनी हैं जांबाज़-ए-वतन
हम सुर्ख़ सिपाही ज़ुल्म शिकन,[3]
आहन पैकर[4] फ़ौलाद-बदन।[5]
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले ।

वो जंग ही क्या वो अमन ही क्या,
दुश्मन जिसमें नाराज़ न हो
वो दुनिया दुनिया क्या होगी,
जिस दुनिया में स्वराज न हो
वो आज़ादी आज़ादी क्या,
मज़दूर का जिसमें राज न हो।
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले।

1. दासों, 2. किसान, 3. जुल्मों के ख़िलाफ़ लड़ने वाले, 4. लोहे के शरीर वाले, 5. इस्पाती शरीर वाले

लो सुर्ख़ सवेरा आता है,
आज़ादी का आज़ादी का
गुलनार तराना गाता है,
आज़ादी का आज़ादी का
देखो परचम लहराता है,
आज़ादी का आज़ादी का ।
ये जंग है जंग-ए-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले ।

● मख़दूम मोहिउद्दीन

बोल अरी ओ धरती बोल

बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल
बादल बिजली रैन अंधियारी, दुख की मारी परजा सारी
बच्चे बूढ़े सब दुखिया हैं, दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती-बस्ती लूट मची है, सब बनिये हैं सब व्योपारी
बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल
कलजुग में जग के रखवाले, चांदी वाले, सोने वाले
देसी हों या परदेसी हों, नीले-पीले, गोरे-काले
मक्खी भुनगे भिन्न-भिन्न करते, ढूंढें हैं मकड़ी के जाले
बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल
क्या अफ़रंगी, क्या तातारी, आँख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी, कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सरमाये के धन्धे, कब तक ये सरमायादारी
बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल
नामी और मशहूर नहीं हम, लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोखा और मज़दूरों को दें, ऐसे तो मज़बूर नहीं हम।
मंज़िल अपने पांव के नीचे, मंज़िल से अब दूर नहीं हम
बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल
बोल कि तेरी ख़िदमत की है, बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाये हैं, बोल कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र उठाया, बोल कि हमसे हश्र उठा है
बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती
बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डांवाडोल

● मजाज़ लखनवी

बुनियाद हिलनी चाहिए

हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
अब हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

● दुश्यंत कुमार

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
जिंदगी आंसुओं में नहायी न हो
शाम सहमी न हो, रात हो न डरी
भोर की आँख फिर डबडबाई न हो

सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे
रोशनी रोशनाई में डूबी न हो.
यूँ न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा
हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो
आसमान में टंगी हो न खुशहालियां
कैद महलों में सबकी कमाई न हो
इसलिए राह ...

कोई अपनी खुशी के लिए गैर की
रोटियाँ छीन ले हम नहीं चाहते
छींटकर थोड़ा चारा कोई उम्र की
हर खुशी बीन ले हम नहीं चाहते
हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा
और किसी के लिए एक चटाई न हो
इसलिए राह ...

अब तमन्नायें फिर न करें ख़ुदकुशी
ख्वाब पर खौफ की चौकसी न रहे
श्रम के पावों में हो न पड़ी बेडियाँ
शक्ति की पीठ अब ज्यादती न सहे
दम न तोड़े कही भूख से बचपना
रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो
इसलिए राह ...

- वशिष्ठ अनूप

मशाले लेकर चलना, जब तक रात बाकी है

मशाले लेकर चलना, जब तक रात बाकी है
संभलकर हर कदम रखना, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना...

मिले मंसूर को सूली, ज़हर सुकरात के हिस्से
रहेगा जुर्म सच कहना, जब तक रात बाकी है
मशाले लेकर चलना...

पसीने की तो तुम छोड़ो, लहू मजदूर का यारों,
है सस्ता खून पानी से, जब तक रात बाकी है
मशाले लेकर चलना...

झुका सिर को तू मंदिर में या मस्जिद में तू कर सजदा,
तेरे गम तो न होंगे कम, जब तक रात बाकी है
मशाले लेकर चलना...

जब तक रहेंगे सवार, हर महफ़िल पे उल्लू ही,
पपीहे की सुनेगा कौन, जब तक रात बाकी है
मशाले लेकर चलना...

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के

ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के
अब अँधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के।

कह रही है झोपड़ी और पूछते हैं खेत भी
कब तलक लुटते रहेंगे लोग मेरे गाँव के।

बिन लड़े कुछ भी नहीं मिलता यहां ये जानकर
अब लड़ाई लड़ रहे हैं लोग मेरे गाँव के।

कफ़न बाँधे हैं सिरों पर हाथ में तलवार है
ढूँढने निकले हैं दुश्मन लोग मेरे गाँव के।

चीख़ती है हर रुकावट ठोकरों की मार से
बेड़ियाँ खनका रहे हैं लोग मेरे गाँव के।

दे रहे हैं देख लो अब वो सदा-ए-इंक़लाब
हाथ में परचम लिए हैं लोग मेरे गाँव के।

एकता से बल मिला है झोपड़ी की साँस को
आँधियों से लड़ रहे हैं लोग मेरे गाँव के।

देख 'यारा' जो सुबह फीकी दिखे है आजकल,
लाल रंग उसमें भरेंगे लोग मेरे गाँव के।
ले मशालें...

● बल्ली सिंह चीमा

सारी दुनिया मांगेंगे

हम मेहनतकश जग वालों से,
जब अपना हिस्सा मांगेंगे।
इक खेत नहीं, इक देश नहीं,
हम सारी दुनिया मांगेंगे।
हम मेहनतकश...

यहां पर्वत-पर्वत हीरे हैं,
यहां सागर-सागर मोती हैं।
ये सारा माल हमारा है,
हम सारा खजाना मांगेंगे।
हम मेहनतकश...

ये सेठ, व्यापारी, रजवाड़े
दस लाख तो हम हैं दस लाख करोड़।
ये कब तक रूस-अमरीका से,
जीने का सहारा मांगेंगे।
हम मेहनतकश...

जो खून बहे जो बाग उजड़े,
जो गीत दिलों में कत्ल हुए।
हर कतरे का हर गुंचे का,
हर गीत का बदला मांगेंगे।
हम मेहनतकश...

जब सब सीधा हो जाएगा,
जब सब झगडे मिट जायेंगे
हम हर एक देश के झंडे पर,
एक लाल सितारा मांगेंगे।
हम मेहनतकश...

● फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

पढ़ना-लिखना सीखो

पढ़ना-लिखना सीखो ओ मेहनत करने वालो
पढ़ना-लिखना सीखो ओ भूख से मरने वालो
क ख ग घ को पहचानो
अलिफ़ को पढ़ना सीखो,
अ आ इ ई को
हथियार बनाकर लड़ना सीखो

ओ सड़क बनाने वालो, ओ भवन उठाने वालो
खुद अपनी किस्मत का फैसला अगर तुम्हें करना है
ओ बोझा ढोने वालो, ओ रेल चलाने वालो
अगर देश की बागडोर को क़ब्ज़े में करना है
क ख ग घ को पहचानो
अलिफ़ को पढ़ना सीखो,
अ आ इ ई को
हथियार बनाकर लड़ना सीखो

पूछो मज़दूरी की खातिर लोग भटकते क्यों हैं?
पढ़ो, तुम्हारी सूखी रोटी गिद्ध लपकते क्यों हैं?
पूछो, मां-बहनों पर यों बदमाश झपटते क्यों हैं?
पढ़ो, तुम्हारी मेहनत का फल सेठ गटकते क्यों हैं?

पढ़ो, लिखा है दीवारों पर मेहनतकश का नारा
पढ़ो, पोस्टर क्या कहता है, वो भी दोस्त तुम्हारा
पढ़ो, अगर अंध-विश्वासों से पाना छुटकारा
पढ़ो, किताबें कहती हैं—सारा संसार तुम्हारा
पढ़ो, कि हर मेहनतकश को उसका हक दिलवाना है
पढ़ो, अगर इस देश को अपने ढंग से चलवाना है
क ख ग घ को पहचानो
अलिफ़ को पढ़ना सीखो,
अ आ इ ई को
हथियार बनाकर लड़ना सीखो

● सफ़दर हाशमी

दरबार-ए-वतन

दरबार-ए-वतन में जब इक दिन सब जाने वाले जाएँगे
कुछ अपनी सज़ा को पहुँचेंगे, कुछ अपनी जज़ा ले जाएँगे

ऐ ख़ाक-नशीनो उठ बैठो वो वक़्त क़रीब आ पहुँचा है
जब तख़्त गिराए जाएँगे जब ताज उछाले जाएँगे

अब टूट गिरेंगी ज़ंजीरें अब ज़िंदानों की ख़ैर नहीं
जो दरिया झूम के उट्ठे हैं तिनकों से न टाले जाएँगे

कटते भी चलो, बढ़ते भी चलो, बाज़ू भी बहुत हैं सर भी बहुत
चलते भी चलो कि अब डेरे मंज़िल ही पे डाले जाएँगे

ऐ ज़ुल्म के मातो, लब खोलो चुप रहने वालो चुप कब तक
कुछ हश्र तो उन से उट्ठेगा कुछ दूर तो नाले जाएँगे

● फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

अब कोई शम्मा जलाइए

गर हो सके तो अब कोई शम्मा जलाइए
इस दौरे सियासत का अँधेरा मिटाइए
गर हो सके तो...

जुल्मो सितम की आग लगी है यहां-वहां
आग से नहीं, पानी से इसको बुझाइए।
गर हो सके तो...

बस कीजिए आकाश में नारे उछालना
ये जंग है इस जंग में ताकत लगाइए।
गर हो सके तो...

क्यों कर रहे हैं आंधिया रुकने का इंतजार
आइए हमारे कांधे से कांधा मिलाइए।
गर हो सके तो...

चैनो-अमन का सांस अब घुटने लगा यहां
लेना है अगर सांस तो नफरत मिटाइए।
गर हो सके तो...

हैवानियत का दौर ये नेता चला रहे हैं
गुज़ारिश है शरीफ़ो से मैदां में आइए।
गर हो सके तो...

नफरत फैला रहे हैं जो मज़हब के नाम पर
सत्ता के भूखे लोगों से मज़हब बचाइए।
गर हो सके तो...

चुपचाप क्यूं है आप जब ये देश जल रहा
गर देश है प्यारा तो कफन सर पे बांधिए।
गर हो सके तो...

● पाश

मुल्क में हैं आवाजें दो

एक हमारी और एक उनकी, मुल्क में हैं आवाजें दो
अब तुम पर है कौन सी तुम आवाज सुनो तुम क्या मानो

हम कहते हैं जात-धर्म से इंसा की पहचान गलत
वो कहते हैं सारे इंसा एक हैं यह एलान गलत

हम कहते हैं नफरत का जो हुक्म दे वो फरमान गलत
वो कहते हैं ये मानो तो सारा हिन्दुस्तान गलत

हम कहते हैं भूल के नफरत, प्यार की कोई बात करो...
वो कहते हैं खून खराबा होता है तो होने दो

एक हमारी और एक उनकी, मुल्क में हैं आवाजें दो
अब तुम पर है कौन सी तुम आवाज सुनो तुम क्या मानो

हम कहते हैं इंसानो में इंसानो से प्यार रहे
वो कहते हैं हाथों मे त्रिशूल रहे, तलवार रहे

हम कहते हैं बेघर बेदर लोगों को आबाद करो
वो कहते हैं भूले-बिसरे मंदिर-मस्जिद याद करो

एक हमारी और एक उनकी, मुल्क में हैं आवाजें दो
अब तुम पर है कौन सी तुम आवाज सुनो तुम क्या मानो

● जावेद अख़्तर

मैंने ही सजाया है

किसान गीत

हल चला के खेतों को, मैंने ही सजाया है
गेहूं चावल मक्का के, दाने को उगाया है
चूल्हा भी बनाया मैंने, धान भी पकाया है
रहूं क्यूँ भूखे पेट रे, कि मेरे लिए काम नहीं
रहूं क्यूँ भूखे पेट रे...

मिट्टी की खुदाई की, भट्टी को जलाया है
ईंटों को पकाया रे, बंगला बनाया रे
संसार का हर एक खम्भा, मैंने ही उठाया रे
सोएं क्यों फुटपाथ पे, कि मेरे लिए काम नहीं
खाद्य को बनाया मैंने, मिलों को चलाया रे
तन-मन जोड़ के, कपड़ा बनाया रे
सपने के रंगों से, उनको सजाया है
मुझे कफ़न नहीं रे, कि मेरे लिए काम नहीं
मुझे कफ़न नहीं रे...

ट्रेन को बनाया मैंने, सड़कों को बिछाया रे
हवा में उड़ाया रे, चाँद से मिलाया रे
नाव को बनाया मैंने, पानी पे चलाया रे
मेरी न जिंदगी चले, कि मेरे लिए काम नहीं
मेरी न जिंदगी चले...

स्वराज के ताज को, मैंने ही बनाया रे
मंदिरों को मस्जिदों को, मैंने ही सजाया रे
मंदिर की तार को, मांदर को बजाया रे
मेरा संगीत कहाँ रे, कि मेरे लिए काम नहीं
मेरा संगीत कहाँ रे...

सपने सजाएंगे, जिंदगी बनाएंगे
उंगलियों को मोड़ के, हाथों को उठाएंगे
आसमान को छुएंगे, जिन्दाबाद गाएंगे
गाएंगे जब तक रे, कि जब तक काम नहीं
लड़ेंगे जब तक रे, कि तब तक काम नहीं
लड़ेंगे जब तक रे...

● विनय एवं चारुल

तू हिंदू बनेगा ना मुसलमान बनेगा

तू हिंदू बनेगा ना मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा-2

अच्छा है अभी तक तेरा कुछ नाम नहीं है
तुझको किसी मजहब से कोई काम नहीं है

जिस इल्म ने इंसान को तकसीम किया है
उस इल्म का तुझ पर कोई इलज़ाम नहीं है

तू बदले हुए वक्त की पहचान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

मालिक ने हर इंसान को इंसान बनाया
हमने उसे हिंदू या मुसलमान बनाया

कुदरत ने तो बख्शी थी हमें एक ही धरती
हमने कहीं भारत कहीं ईरान बनाया

जो तोड़ दे हर बंध वो तूफ़ान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

नफरत जो सिखाये वो धरम तेरा नहीं है
इन्सान को जो रौंदे वो कदम तेरा नहीं है

कुरआन न हो जिसमें वो मंदिर नहीं तेरा
गीता न हो जिसमे वो हरम तेरा नहीं है

तू अम्न का और सुलह का अरमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

ये दीन के ताजिर ये वतन बेचने वाले
इन्सानों की लाशों के कफ़न बेचने वाले

ये महलों में बैठे हुए ये कातिल ये लुटेरे
काँटों के एवज़ रूह-ए-चमन बेचने वाले

तू इनके लिये क्रांति की पहचान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

तू हिंदू बनेगा ना मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

● साहिर लुध्यानवी

मत बाँटो इंसान को

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने बाँट लिया भगवान को,
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इंसान को।
मंदिर-मस्जिद...

हिन्दू कहता मंदिर मेरा, मंदिर मेरा धाम है,
मुस्लिम कहता, मक्का मेरे अल्लाह का ईमान है।
दोनों लड़ते, लड-लड मरते, लड़ते-लड़ते ख़त्म हुए,
दोनों ने एक दूजे पर न जाने क्या-क्या ज़ुल्म किए।
किसका मकसद, किसकी चाल मिलकर तुम सब जान लो।
धरती बांटी...

नेता ने सत्ता की खातिर कौमवाद से काम किया,
धरम के ठेकेदार से मिलकर लोगों को नाकाम किया।
भाई बंटे टुकड़े-टुकड़े में, नेता का है मान बढ़ा,
वोट मिले और नेता जीता, शोषण को आधार मिला।
वक़्त नहीं बीता है अब भी, वक़्त की कीमत जान लो।।
धरती बांटी...

प्रजातंत्र में प्रजा को लूटे ये कैसी सरकार है,
लाठी, गोली, ईश्वर-अल्लाह ये सारे हथियार हैं।
इनसे बचो और बच के रहो और लड़कर इनसे जीत लो,
हक है तुम्हारा चैन से रहना, अपने हक को छीन लो।
अगर हो तुम शैतानी से तंग तो ख़त्म करो शैतान को।।
धरती बांटी...

● विनय महाजन

ज़रा सबसे ये कह दो

मुँह सी के अब जी न पाऊँगी
ज़रा सब से ये कह दो
विष पीके अब जी न पाऊँगी
ज़रा सब से ये कह दो

मैय्या कहे बिटिया सीस झुकाना
सर को मैं ऊँचा उठाऊँगी
ज़रा सबसे यह कह दो

बापू कहे बिटिया पढ़ने न जाना
अपना मैं ज्ञान बढ़ाऊँगी
ज़रा सबसे यह कह दो

भैय्या कहे बहना चौखट ना लाँघो
चार दीवारी को गिराऊंगी
ज़रा सबसे यह कह दो
पिंजरों से पीछा छुडाऊंगी
ज़रा सबसे यह कह दो

शास्त्र कहें पिता-पति हैं स्वामी
अब न गुलामी कर पाऊँगी
ज़रा सबसे यह कह दो
रिश्ते बराबर के बनाऊँगी
ज़रा सबसे यह कह दो

दुनिया कहे मुनिया मन की ना करना
मन को ना अब मैं दबाऊँगी
ज़रा सबसे यह कह दो
अपने ही सपने सजाऊँगी
ज़रा सबसे यह कह दो

● कमला भसीन

पर लगा लिए हैं हमने

पर लगा लिए हैं हमने
अब पिंजरों में कौन बैठेगा
ज़रा सुन लो

अब तोड़ दी हैं जंज़ीरें
तो कामयाब हो जायेंगे
ज़रा सुन लो

खड़े हो गए हैं मिल के
तो हमको कौन रोकेगा
ज़रा सुन लो

दीवारे तोड़ दी हमने
अब खुल कर साँस लेंगे
ज़रा सुन लो

औरों की ही मानी अब तक
अब खुदी को बुलंद करेंगे
ज़रा सुन लो

देखो सुलग उठी चिंगारी
अब ज़ुल्मों की शामत आई है
ज़रा सुन लो

● कमला भसीन

इरादे कर बुलंद

इरादे कर बुलंद अब रहना शुरू करती तो अच्छा था
तू सहना छोड़कर कहना शुरू करती तो अच्छा था।

सदा औरों को खुश रखना बहुत ही खूब है लेकिन
खुशी थोड़ी तू अपने को भी दे पाती तो अच्छा था।

दुखों को मानकर किस्मत हार कर रहने से क्या होगा
तू आँसू पोंछकर अब मुस्कुरा लेती तो अच्छा था।

ये पीला रंग, लब सूखे सदा चेहरे पे मायूसी
तू अपनी एक नयी सूरत बना लेती तो अच्छा था।

तेरी आँखों में आँसू हैं तेरे सीने में हैं शोले
तू इन शोलों में अपने गम जला लेती तो अच्छा था।

है सर पर बोझ जुल्मों का तेरी आँखे सदा नीची
कभी तो आँखे उठा तेवर दिखा देती तो अच्छा था।

तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है लेकिन
तू इस आँचल का इक परचम बना लेती तो अच्छा था।*

*(*मशहूर शायर मजाज़ की ग़ज़ल की पंक्ति)*

● कमला भसीन

मेरे सपनों को जानने का हक़ रे

मेरे सपनों को जानने का हक़ रे
क्यूँ सदियों से टूट रहे हैं
इन्हें सजने का नाम नहीं

मेरे हाथों को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ बरसों से खाली पड़े हैं
इन्हें आज भी काम नहीं

मेरे पैरों को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ गांव-गांव चलना पड़े रे,
क्यूँ बस का निशान नहीं

मेरी भूख को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ गोदामों में सड़ते हैं दाने,
मुझे मुठ्ठी भर धान नहीं

मेरी बूढ़ी माँ को जानने का हक़ रे
क्यूँ गोली नहीं सुई-दवाखाने,
पट्टी-टांके का सामान नहीं

मेरे बच्चों को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ रात-दिन करें मजदूरी,
क्यूँ शाला मेरे गांव नहीं

मेरे खेतों को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ बांध बने रे बड़े-बड़े,
तो भी फसलों में जान नहीं

मेरी नदियों को जानने का हक़ रे
क्यूँ ज़हर मिलायें कारखाने,
जैसे नदियों में जान नहीं

मेरे जंगलों को जानने का हक़ रे
कहां डालियां वो पत्ते, तने, मिट्टी,
क्यूँ झरनों का नाम नहीं

मेरे गांव को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ बिजली ना सड़कें ना पानी,
खुली राशन की दुकान नहीं

मेरी बस्तियों को जानने का हक़ रे
क्यूँ बसे हुये घर वो उजाड़े,
रहे नामोनिशान नहीं

मेरे वोटों को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ एक दिन बड़े-बड़े वादे,
फिर पांच साल काम नहीं

मेरे राम को ये जानने का हक़ रे
रहमान को ये जानने का हक़ रे
क्यूँ खून बहे रे सड़कों पे,
क्या सब इन्सान नहीं

मेरी ज़िंदगी को जीने का हक़ रे
अब हक़ के बिना भी क्या जीना,
ये जीने के समान नहीं

1

वो सुब्ह कभी तो आएगी

इन काली सदियों के सर से जब रात का आँचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा जब धरती नग़मे गाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी

जिस सुब्ह की ख़ातिर जुग-जुग से हम सब मर-मर कर जीते हैं
जिस सुब्ह के अमृत की धुन में हम ज़हर के प्याले पीते हैं
इन भूकी प्यासी रूहों पर इक दिन तो करम फ़रमाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी

माना कि अभी तेरे मेरे अरमानों की क़ीमत कुछ भी नहीं
मिट्टी का भी है कुछ मोल मगर इंसानों की क़ीमत कुछ भी नहीं
इंसानों की इज़्ज़त जब झूटे सिक्कों में न तौली जाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी

दौलत के लिए जब औरत की इस्मत को न बेचा जाएगा
चाहत को न कुचला जाएगा ग़ैरत को न बेचा जाएगा
अपने काले करतूतों पर जब ये दुनिया शरमाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी

बीतेंगे कभी तो दिन आख़िर ये भूक के और बेकारी के
टूटेंगे कभी तो बुत आख़िर दौलत की इजारा-दारी के
जब एक अनोखी दुनिया की बुनियाद उठाई जाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी

मजबूर बुढ़ापा जब सूनी राहों की धूल न फाँकेगा
मासूम लड़कपन जब गंदी गलियों में भीक न माँगेगा
हक़ माँगने वालों को जिस दिन सूली न दिखाई जाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी

फ़ाक़ों की चिताओं पर जिस दिन इंसाँ न जलाए जाएँगे
सीनों के दहकते दोज़ख़ में अरमाँ न जलाए जाएँगे
ये नरक से भी गंदी दुनिया जब स्वर्ग बनाई जाएगी
वो सुब्ह कभी तो आएगी

2

वो सुब्ह हमीं से आएगी

जब धरती करवट बदलेगी जब क़ैद से क़ैदी छूटेंगे
जब पाप घरौंदे फूटेंगे जब ज़ुल्म के बंधन टूटेंगे
उस सुब्ह को हम ही लाएँगे वो सुब्ह हमीं से आएगी
वो सुब्ह हमीं से आएगी

मनहूस समाजी ढाँचों में जब ज़ुल्म न पाले जाएँगे
जब हाथ न काटे जाएँगे जब सर न उछाले जाएँगे
जेलों के बिना जब दुनिया की सरकार चलाई जाएगी
वो सुब्ह हमीं से आएगी

संसार के सारे मेहनत-कश खेतों से मिलों से निकलेंगे
बे-घर बे-दर बे-बस इंसाँ तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अम्न और ख़ुश-हाली के फूलों से सजाई जाएगी
वो सुब्ह हमीं से आएगी

- साहिर लुध्यानवी

ये किसका लहू है कौन मरा

धरती की सुलगती छाती के बेचैन शरारे पूछते हैं
तुम लोग जिन्हे अपना न सके, वो खून के धारे पूछते हैं
सड़कों की जुबान चिल्लाती है
सागर के किनारे पूछते हैं -

ये किसका लहू है कौन मरा
ऐ रहबर-ए-मुल्क-ओ-कौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा

ये जलते हुए घर किसके हैं
ये कटते हुए तन किसके है
तकसीम के अंधे तूफ़ान में
लुटते हुए गुलशन किसके हैं
बदबख्त फिजायें किसकी हैं
बरबाद नशेमन किसके हैं

कुछ हम भी सुने, हमको भी सुना
ऐ रहबर-ए-मुल्क-ओ-कौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा

किस काम के हैं ये दीन-धरम
जो शर्म के दामन चाक करें
किस तरह के हैं ये देश भगत
जो बसते घरों को खाक करें
ये रूहें कैसी रूहें हैं
जो धरती को नापाक करें

आँखे तो उठा, नज़रें तो मिला.
ऐ रहबर-ए-मुल्क-ओ-कौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा

जिस राम के नाम पे खून बहे
उस राम की इज्जत क्या होगी
जिस दीन के हाथों लाज लूटे
उस दीन की कीमत क्या होगी
इन्सान की इस जिल्लत से परे
शैतान की जिल्लत क्या होगी

ये वेद हटा, कुरआन उठा.
ऐ रहबर-ए-मुल्क-ओ-कौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा

● साहिर लुध्यानवी

अपने लिये जिये तो क्या जिये

खुदगर्ज़ दुनिया में ये इंसान की पहचान है
जो पराई आग में जल जाये वो इंसान है

अपने लिये जिये तो क्या जिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये
तू जी ऐ दिल ज़माने के लिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये

बाज़ार से ज़माने के कुछ भी न हम खरीदेंगे
बाज़ार से ज़माने के कुछ भी न हम खरीदेंगे
हाँ बेचकर खुशी अपनी
लोगों के ग़म खरीदेंगे
बुझते दिये जलाने के लिये
बुझते दिये जलाने के लिये
तू जी ऐ दिल ज़माने के लिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये

अपनी खुदी को जो समझा
उसने खुदा को पहचाना
अपनी खुदी को जो समझा
उसने खुदा को पहचाना
आज़ाद फ़ितरते इनसां
अन्दाज़ क्यों गुलामाना
सर ये नहीं झुकाने के लिये
सर ये नहीं झुकाने के लिये
तू जी ऐ दिल ज़माने के लिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये

हिम्मत बुलंद है अपनी
पत्थर सी जान रखते हैं
हिम्मत बुलंद है अपनी
पत्थर सी जान रखते हैं

कदमों तले ज़मीं तो क्या
हम आसमान रखते हैं
गिरते हुओं को उठाने के लिये
गिरते हुओं को उठाने के लिये
तू जी ऐ दिल ज़माने के लिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये

चल आफ़ताब लेकर चल
चल महताब लेकर चल
चल आफ़ताब लेकर चल
चल महताब लेकर चल
तू अपनी एक ठोकर में
सौ इन्क़लाब लेकर चल
ज़ुल्म और सितम मिटाने के लिये
ज़ुल्म और सितम मिटाने के लिये
तू जी ऐ दिल ज़माने के लिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये
तू जी ऐ दिल ज़माने के लिये
अपने लिये जिये तो क्या जिये

- जावेद अनवर

हम चले...

हम चले, हम चले, हम चले
ऊदर में आज तूफां तले।
पांव तक खुद चले आ रहे
एक दो क्या सभी मरहले।

अजगरों सी लहर उठ रही तो उठे
पांव पर है भरोसा हमें
है हरारत लहू और पसीना सभी-2
क्या नहीं है, यहां बांह में
छूट जाएं सहारे भले
आसमाँ छू रहे हौसले।
हम चले...

कश्तियां डगमगाती रहें तो रहें
पर्वतों से अडिग हम रहें
हो मगर या भँवर या कि मझधार हो
सौ क़यामत, कहर भी ढहे
प्राण फौलाद में हैं ढले
झूमते चल पड़े क़ाफ़िले
हम चले...

आफतों की घटाएं घिरें तो घिरें
सर उठाए सिपाही बढ़ें
बिजलियां सी बलायें गिरें तो गिरें
दौड़कर विघ्न पर जा चढ़ें
मंज़िलें हैं क़दम के तले
खुद-ब-खुद घट चले फासले
हम चले...

- उमाकांत मालवीय

दिलो में घाव ले के भी चले चलो

चले चलो दिलो में घाव ले के भी चले चलो
चलो लहूलुहान पांव ले के भी चले चलो
चलो की आज साथ-साथ चलने की ज़रूरतें
चलो की खत्म हो न जाएं जिंदगी की हसरतें

ज़मीन, ख्वाब जिंदगी, यकीन सबको बांटकर
वो चाहते हैं बेबसी में आदमी झुकाये सर
वो चाहते हैं जिंदगी हो रौशनी से बेखबर
वो एक-एक करके अब जला रहे हैं हर शहर
जले हुए घरों के ख्वाब ले के चलो
चले चलो ...

वो चाहते हैं बांटना दिलों के सारे वलवले
वो चाहते हैं बांटना ये जिंदगी के काफिले
वो चाहते हैं खत्म हो उम्मीद के ये सिलसिले
वो चाहते हैं गिर सके न लूट के ये सब किले
सवाल ही है अब जवाब ले के भी चले चलो
चले चलो ...

वो चाहते हैं जातियों की बोलियों की फूट हो
वो चाहते हैं धर्म को तबाहियों की छूट हो
वो चाहते हैं जिंदगी ये हो फरेब, झूठ हो
वो चाहते हैं जिस तरह भी हो मगर ये लूट हो
सिरों पे जो बची है छांव ले के भी चले चलो
चले चलो दिलों में घाव ले के भी चले चलो

● ब्रजमोहन

धरती कहे पुकार के

भाई रे ! गंगा और जमुना की गहरी है धार
आगे या पीछे सबको जाना है पार

धरती कहे पुकार के, बीज बिछा ले प्यार के
मौसम बीता जाय, मौसम बीता जाय

कोरस—मौसम बीता जाय, मौसम बीता जाय -२

अपनी कहानी छोड़ जा, कुछ तो निशानी छोड़ जा
कौन कहे इस ओर तू फिर आये न आये

कोरस—मौसम बीता जाय, मौसम बीता जाय -२

तेरी राह में कलियों ने नैन बिछाये
डाली-डाली कोयल काली तेरे गीत गाये, तेरे गीत गाये
अपनी कहानी छोड़ जा, कुछ तो निशानी छोड़ जा
कौन कहे इस ओर तू फिर आये न आये

कोरस—मौसम बीता जाय, मौसम बीता जाय -२

हो भाई रे ! नीला अम्बर मुस्काये, हर साँस तराने गाये
हाय तेरा दिल क्यों मुरझाये

कोरस—हो हो हो हो हो
मन की बन्शी पे तू भी कोई धुन बजा ले भाई
तू भी मुस्कुरा ले

अपनी कहानी छोड़ जा, कुछ तो निशानी छोड़ जा
कौन कहे इस ओर तू फिर आये न आये

कोरस—मौसम बीता जाय, मौसम बीता जाय -२

● शैलेंद्र

चीन-ओ-अरब हमारा, हिन्दोस्ताँ हमारा

चीन-ओ-अरब हमारा, हिन्दोस्ताँ हमारा
रहने को घर नही है, सारा जहाँ हमारा
चीन-ओ-अरब हमारा ...

खोली भी छिन गई है, बेन्चें भी छिन गई हैं
सड़कों पे घूमता है अब कारवाँ हमारा
जेबें हैं अपनी खाली, क्यों देता वरना गाली
वो सन्तरी हमारा, वो पासबाँ हमारा
चीन-ओ-अरब हमारा ...

जितनी भी बिल्डिगें थीं, सेठों ने बाँट ली हैं
फ़ुटपाथ बम्बई के हैं आशियाँ हमारा
सोने को हम कलन्दर, आते हैं बोरी बन्दर
हर एक खोली यहाँ है राज़दाँ हमारा
चीन-ओ-अरब हमारा ...

तालीम है अधूरी, मिलती नही मजूरी
मालूम क्या किसीको, दर्द-ए-निहाँ हमारा
चीन-ओ-अरब हमारा ...

पतला है हाल-ए-अपना, लेकिन लहू है गाढ़ा
फौलाद् से बना है, हर नौजवाँ हमारा
मिल-जुलके इस वतन को, ऐसा सजायेंगे हम
हैरत से मुँह तकेगा सारा जहाँ हमारा
चीन-ओ-अरब हमारा ...

कहब तो लग जाई धक् से...

कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
बड़े-बड़े लोगन के बंगला दो बंगला
और भैया झूमर अलग से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
हमरे गरीबन के झोपड़ी जुलुम्बा
बर्सेला पानी तो छत से गिरे टप्प से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
बड़े बड़े लोगन के पूरी और रबड़ी
और मिनरल वाटर अलग से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
हमरे गरीबन के चटनी और रोटी
पानी पीएं बालू वाला नल से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
बड़े बड़े लोगन के जीन्स और पैंट भैया
और भैया कोट अलग से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
हमरे गरीबन के कुर्ता जुलुमवा
पहने तो फ़ट जाए चर्र से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
बड़े बड़े लोगन के स्कूल- कॉलेज
और भैया ट्यूशन अलग से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
बड़े बड़े लोगन के संघी और साथी
और भैया सरकार अलग से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से
हमरे गरीबन के यूनियन जुलम्बा
बोले तो लाठी पड़े ठक्क से
कहब तो लग जाई धक् से, धक् से

अजदिया हमरा के भावेले

झीनी-झीनी बीनीं, चदरिया लहरेले तोहरे कान्हे
जब हम तन के परदा माँगी आवे सिपहिया बान्हे
सिपहिया से अब नाही बन्हइबो, चदरिया हमरा के भावेले।
गुलमिया अब हम नाही बजइबो, अजदिया हमरा के भावेले।

कंकड चुनि-चुनि महल बनवलीं हम भइलीं परदेसी
तोहरे कनुनिया मारल गइलीं कहवों भइल न पेसी
कनुनिया अइसन हम नाहीं मनबो, महलिया हमरा के भावेले।
गुलमिया अब हम नाही बजइबो, अजदिया हमरा के भावेले।

दिनवा खदनिया से सोना निकललीं रतिया लगवलीं अँगूठा
सगरो जिनगिया करजे में डूबलि कइल हिसबवा झूठा
जिनगिया अब हम नाहीं डुबइबो, अछरिया हमरा के भावेले।
गुलमिया अब हम नाही बजइबो, अजदिया हमरा के भावेले।

हमरे जंगरवा के धरती फुलाले फुलवा में खुसबू भरेले
हमके बनुकिया के कइल बेदखली तोहरे मलिकई चलेले
धरतिया अब हम नाहीं गंवइबो, बनुकिया हमरा के भावेले।
गुलमिया अब हम नाही बजइबो, अजदिया हमरा के भावेले।

● गोरख पाण्डेय

बड़ी-बड़ी कोठिया सजाये पूंजीपतिया

बड़ी-बड़ी कोठिया सजाये पूंजीपतिया
की दुखिया के रोटिया चोराए-चोराए
अपने महलिया में करे उजियरवा
की बिजोरी के रडवा जराए–जराए

कत्तो बने भिटवा कतहुं बने गडही
कत्तो बने महल कतहुं बने मडई
मटिया के दियना तूही त बुझवाया
की सोनवा के बनवा डोलाए-डोलाए
बड़ी–बड़ी कोठिया...

मिलिया में खून जरे खेत में पसीनवां
तबहुं न मिलिहें पेट भर दनवां
अपनी गोदमिया तूही त भरवाया
की बड़े बड़े बोरवा सियाए-सियाए
बड़ी–बड़ी कोठिया...

राम अउर रहीम के ताखे पे धइके लाला
खोई के ईमनवा बटोरे धन काला
देसवा कs हमरे तू लूट के खाया
कई गुना दमवा बढाए-बढाए
बड़ी-बड़ी कोठिया...

जेतs करे काम छोट कहवावे
ऊ बा बड मनई जे जतन बतावे
दस के ससनवा नब्बे पे करवावे
इहे परिपाटिया चलाए-चलाए
बड़ी-बड़ी कोठिया...

जुड होई छतिया तनिक दऊ बरसा
अब त महलिया में खुलिहें मदरसा
दुखिया का लरिका पढ़े बदे जइहें
छोट बड टोलिया बनाए-बनाए
बड़ी-बड़ी कोठिया...

बिनु काटे भिटवा गडहिया न पटिहें
अपने खुशी से धन धरती न बटिहें
जनता कऽ तलवा तिजोरिया पे लागिहें
कि महल में बजना बजाए-बजाए
बड़ी-बड़ी कोठिया...
-जमुई खां आज़ाद

गाँव-गाँव से उठो...

गाँव-गाँव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो-2
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो-2

हाथ में जिसके कलम है कलम लेके उठो-2
बाजा बजाना जानने वाले बाजा लेके उठो-2

गाँव-गाँव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो-2
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो-2

हाथ में जिसके औज़ार है औज़ार लेके उठो-2
पास में जिसके कुदाल है कुदाल लेके उठो-2

गाँव-गाँव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो-2
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो-2

हाथ में जिसके किताब है वो इल्म लेके उठो-2
पास में जिसके कुछ भी नहीं आवाज़ लेके उठो-2

गाँव-गाँव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो-2
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो-2

(एक नेपाली गीत 'गांव गांव बाटा उट्ठो' का हिंदी रूपांतर)

डोला हो डोला

हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया
हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया
हे डोला हे डोला हे डोला हे डोला

आँके बाँके रास्तों पे कान्धे लिए जाते हैं
राजा महाराजाओं का डोला
हे डोला हे डोला हे डोला

देह जलाइके, पसीना बहाइके
दौड़ाते हैं डोला
हे डोला हे डोला हे डोला
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया

ऊंचे हैं, नीचे हैं, रास्तों के पाँव रे
कान्धो से गिरे नहीं डोला
ऊंचे हैं, नीचे हैं, रास्तों के पाँव रे
कान्धो से गिरे नहीं डोला

ज़िंदगी कहार की, चढ़ते पहाड़ की
दौड़ाते हैं डोला
हे डोला हे डोला हे डोला
आँके बाँके रास्तों पे कान्धे लिए जाते हैं
राजा महाराजाओं का डोला
हे डोला हे डोला हे डोला
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया

पालकी से लहराता, गालों को सहलाता
रेशम का हल्का दिलासा
किरणों की झिलमिल में
पर्दों के मखमल में आसान बिराजे हो राजा

बैसाख गुजरा, एक साल उतरा
देखा नहीं तन पे धागा
नंगे हैं पाँव पर धूप और छाँव पर
दौड़ाते हैं डोला
हे डोला हे डोला हे डोला
आँकि बाँकि रास्तों पे कान्धे लिए जाते हैं
राजा महाराजाओं का डोला
हे डोला हे डोला हे डोला
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया

सदियों से ऊँघते हो
पालकी हिलोरे मे
देह मेरा गिरा - हो गिरा - हो गिरा
जागो जागो, देखो कभी
मोरे धनवाले राजा
कोड़ियों के दाम कोई मरा - हो मरा

चोटियाँ पहाड़ की सामने है अपने
पाँव मिला लो कहारों
चोटियाँ पहाड़ की सामने है अपने
पाँव मिला लो कहारों

कान्धे से जो फिसला
नीचे जा गिरेगा
राजाओं का आसान यारों
नीचे जा गिरेगा डोला
राजा महाराजाओं का डोला
हे डोला हे डोला हे डोला
आँकि बाँकि रास्तों पे कान्धे लिए जाते हैं
राजा महाराजाओं का डोला
हे डोला हे डोला हे डोला
देहा जलाइके, पसीना बहाइके
दौड़ाते हैं डोला

हे डोला हे डोला हे डोला
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया
हे हईया ना, हईया ना, हईया ना, हईया

इस गीत के रचयिता भूपेन हजारिका हैं।
इस गीत का हिन्दी मे अनुवाद गुलजार ने किया है।

जैतां एक दिन तो आलो

ततुक नी लगा उदेख
घुनन मुनई नि टेक
जैंता एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में

चाहे हम नी ल्यै सकां
चाहे तुम नी ल्यै सकां
मगर के तो ल्यालो ऊ दिन यो दुनी में

जैदिन कठुलि रात ब्यालि
कौ कड़ाहा पौ फटाली
जैंतां एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में

जैदिन नान-ठुलो नि रौलो
जै दिन त्योर-म्योर नि होलो
जैंता एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में

जै दिन चोर नि फलाल
कैक जोर नि चलौल
जैंता एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में

चाहे बोज्यू नि ल्यै सको
चाहे दाज्यू नि लै सको
मगर नान-तिन तो लालो ऊ दिन यो दुनी में

- गिरीश चन्द्र तिवारी 'गिर्दा'

इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी
फ्लैट नंबर-110, नम्बरदार हाउस,
62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका, नई दिल्ली-110067
टेलीफोन - 011-26177904 टेलीफैक्स - 011-26177904
ईमेल - prakashan.isd@gmail.com
वेबसाइट - isd.net.in

केवल सीमित वितरण के लिए